भारत सरकार

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय

पशुपालन और डेयरी विभाग

लोकसभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-242

दिनांक 02 दिसंबर, 2025 के लिए प्रश्न

डेयरी पशुओं का गोबर

242. डॉ. भोला सिंहः

क्या **मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार को जानकारी है कि दूध को डेयरी किसानों के लिए एक प्रमुख संसाधन माना जाता है और इसे नीतिगत प्राथमिकता दी जाती है जबकि गोबर, जिसमें ऊर्जा, उर्वरक और आय सृजन की अपार क्षमता है, पर अक्सर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता है;

(ख) क्या सरकार ने ग्रामीण परिवारों की घरेलू ईंधन आवश्यकताओं और देश की परिवहन ईंधन मांग को पूरा करने के लिए गोबर-आधारित बायो गैस क्षमता का कोई आकलन किया है;

(ग) क्या सरकार ने मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करने के लिए गोबर के व्यापक उपयोग की क्षमता का कोई मूल्यांकन किया है; और

(घ) यदि हाँ, तो छोटे और सीमांत डेयरी किसानों के लाभ के लिए खाद प्रबंधन, बायो गैस उत्पादन, कम्पोस्ट बनाने और गोबर-आधारित मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा क्या प्रमुख पहल की गई हैं और इसके लिए क्या योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही हैं?

उत्तर

मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री

(श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह)

(क) से (घ) गोबर आधारित बायोगैस में ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन की अपार संभावनाएँ हैं। कई अध्ययनों और क्षेत्र-आधारित आकलनों से यह स्थापित हुआ है कि गोबर आधारित बायोगैस घोल (Slurry) और घोल-आधारित उर्वरकों के प्रयोग से मृदा के जैविक कार्बन में वृद्धि होती है, मृदा संरचना में सुधार होता है, सूक्ष्मजीवी सक्रियता बढ़ती है और जल धारण क्षमता में सुधार होता है। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB) ने आणंद कृषि विश्वविद्यालय/बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के माध्यम से अध्ययन करवाए, जिनसे पता चला कि घोल-आधारित मूल्यवर्धित जैविक उर्वरकों के उपयोग से रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में 25% तक की कमी आ सकती है, साथ ही फसल की पैदावार में भी सुधार हो सकता है। राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB), पशुपालन और डेयरी विभाग (DAHD) के मार्गदर्शन में, डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से देश भर में खाद प्रबंधन परियोजनाओं का क्रियान्वयन कर रहा है। ये पहलें अपशिष्ट के धारणीय उपयोग, ऊर्जा उत्पादन और पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण (Recycling) को बढ़ावा देती हैं। एनडीडीबी ने घरेलू और व्यावसायिक दोनों स्तरों पर एकीकृत खाद मूल्य श्रृंखला मॉडल विकसित किए हैं, जैसे:

I. ज़कारियापुरा मॉडल - विकेन्द्रीकृत घरेलू स्तर की बायोगैस इकाइयाँ।

II. वाराणसी मॉडल - डेयरी संयंत्रों में कैप्टिव उपयोग के लिए केंद्रीकृत बड़े पैमाने का बायोगैस संयंत्र।

III. बनास मॉडल - गोबर आधारित बायोगैस को सीबीजी (CBG) में परिवर्तित करने वाला केंद्रीकृत कंप्रैस्ड बायोगैस (CBG) संयंत्र।

ये मॉडल एंड-टू-एंड खाद मूल्य श्रृंखलाओं पर ज़ोर देते हैं, जिससे छोटे और सीमांत डेयरी किसानों को अतिरिक्त आय प्राप्त होती है, साथ ही जैविक घोल को जैविक खाद में परिवर्तित करके मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम होती है। इन प्रयासों को संस्थागत बनाने और उनका विस्तार करने के लिए, छोटे किसानों के घरों के अहाते में 35,000 विकेन्द्रीकृत बायोगैस संयंत्र (प्रत्येक 2 m^3) लगाए गए हैं, जो खाना पकाने के लिए स्वच्छ ऊर्जा, जैविक उर्वरक उत्पन्न करते हैं, और प्रति वर्ष प्रति संयंत्र लगभग 7 टन CO_2e उत्सर्जन कम करते हैं। इसके अलावा, बनासकांठा और वाराणसी जैसे जिला दुग्ध संघों में बड़े केंद्रीकृत बायोगैस संयंत्र (2,000-4,000 m^3) गतिशीलता और डेयरी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए CBG/बायोगैस का उत्पादन करते हैं, जिससे प्रति वर्ष प्रति संयंत्र 2,400-3,000 टन CO_2e की कमी आती है। बनासकांठा में अतिरिक्त संयंत्र लगाकर इसका अनुकरण किया जा रहा है, और इन प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए अमूल, साबर, दूधसागर (गुजरात) और बरौनी (बिहार) तक मॉडल का विस्तार किया जा रहा है। एनडीडीबी ने 15 राज्यों में डेयरी सहकारी समितियों के साथ 25 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं, जिन्हें धारणीय खाद प्रबंधन और गोबर आधारित मूल्य संवर्धन के राष्ट्रव्यापी विस्तार के लिए सुजुकी आरएंडडी, नाबार्ड, सस्टेन प्लस एनर्जी फाउंडेशन और एनडीडीबी मृदा लिमिटेड के साथ साझेदारी द्वारा समर्थित किया गया है।

****